बम्बू...

टस से मस न होने वाला गधा

कहानीः सुजाता पद्मनाभन
चित्रांकनः मधुवन्ती अनन्तराजन





एकलव्य

बम्बू...
टस से मस न होने वाला गधा

कहानीः सुजाता पद्मनाभन
चित्रांकनः मधुवन्ती अनन्तराजन
अँग्रेज़ी से अनुवादः सीमा



बम्बू लद्दाख के ऊँचे पहाड़ों में पैदा हुए अन्य गधों जैसा ही था... चंचल, सुन्दर और मासूम-सा दिखने वाला। वो कई तरह से पद्मा के परिवार की मदद करता था। उनके खेतों तक खाद ढोकर ले जाता, जौ व गेहूँ की गहाई करता।

कभी-कभार वो पद्मा के छोटे भाई नोनो को सवारी भी कराता था। ऐसा करने में बम्बू को बहुत मज़ा आता। नोनो खाद की टोकरी जितना भारी जो नहीं था। फिर नोनो रास्ते भर गाते-गुनगुनाते उसका मनोरंजन भी करता चलता था!



पर पद्मा, हर हाल में, बम्बू की पसन्दीदा थी। वो बम्बू पर जान छिड़कती थी और उसका बहुत खयाल रखती थी। वो इस बात का ध्यान रखती थी कि अँधेरा होने से पहले ही बम्बू सुरक्षित अपने बाड़े में वापस आ जाए। कौन जाने कोई भूखा हिम-तेंदुआ गाँव के आसपास ही घात लगाए बैठा हो?



पद्मा के परिवार के पास भेड़ें और बकरियाँ, एक गाय और बम्बू था। बाड़े में सभी के लिए पर्याप्त जगह थी। हर शाम अँधेरा होने से पहले पद्मा यह देख लेती थी कि उनकी छोटी-छोटी नाँदों में रात भर के लिए पानी है कि नहीं। कभी-कभी वो बाड़े की झाड़-बुहार कर लेती थी।



ये सब करते हुए पद्मा ने गौर किया कि सूरज डूब जाने के बाद बम्बू कुछ अजीब तरह से व्यवहार करता था। बकरियाँ और भेड़ें तब भी उछल-कूद करती रहती थीं या कभी-कभी उसके पीछे-पीछे घूमती थीं। लेकिन बम्बू जहाँ कहीं भी होता, वहीं अपने घुटनों के बल बैठ जाता था। वो स्थिर बैठा रहता था, एकदम स्थिर, जैसे कोई मूर्ति हो। पद्मा शायद इस बात पर कभी ध्यान नहीं देती अगर वो बम्बू को अक्सर अगले दिन अलस्सुबह ठीक उसी जगह पर बैठा हुआ नहीं पाती।



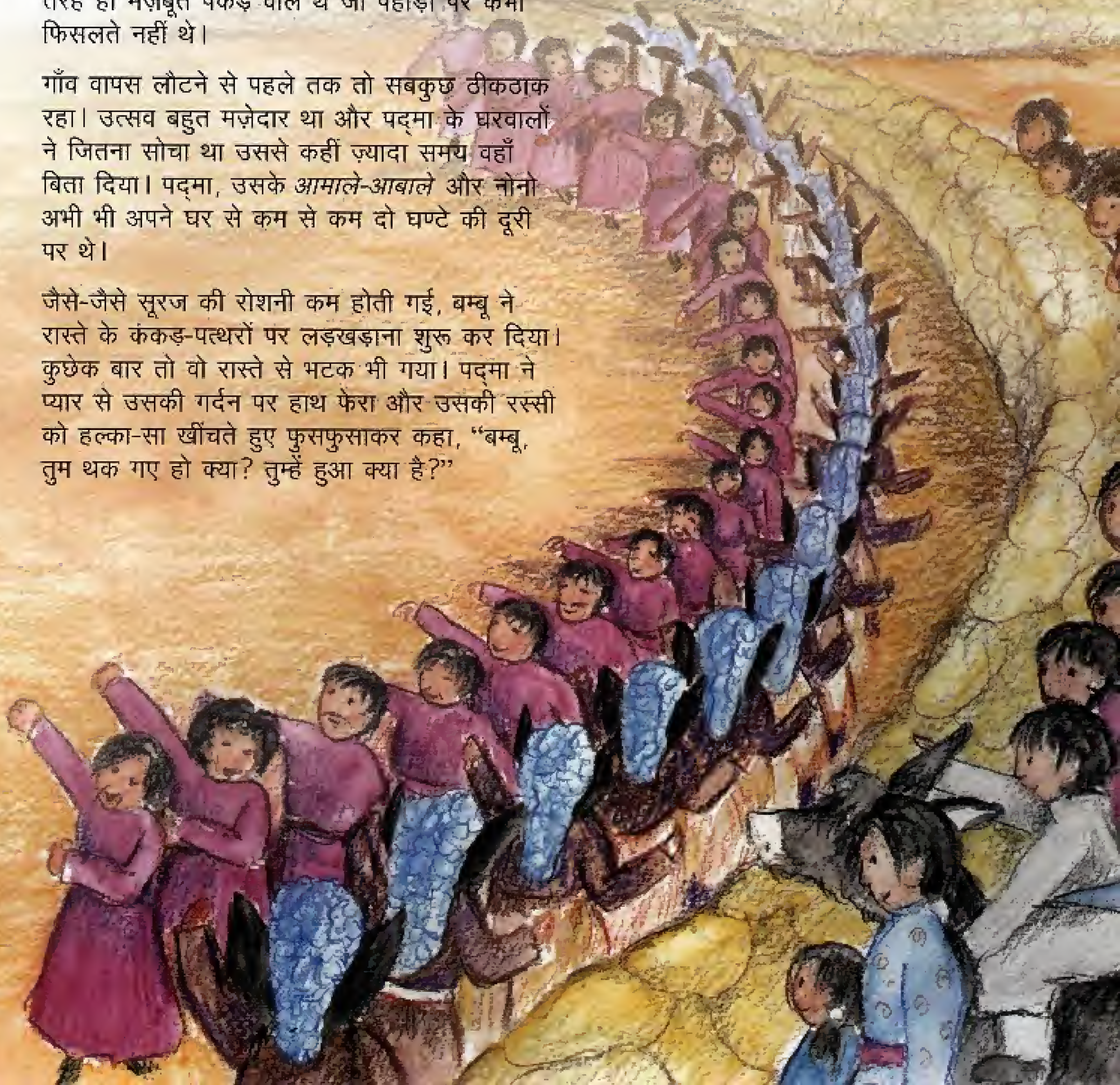


"अरे बम्बू, क्या तुम इतनी गहरी नींद में सोए कि बिलकुल हिले-डुले भी नहीं?" वो उसे गले लगाते हुए पूछती। बम्बू की बड़ी-बड़ी, कोमल आँखों से पद्मा बेहद प्यार करती थी। वो जब भी उन्हें देखती तो कल्पना करती कि बम्बू जब पैदा हुआ होगा तो ज़रूर किसी कलाकार को उसके चेहरे पर उन आँखों को उकेरने के लिए बुलाया गया होगा!

एक दिन पद्मा और उसका परिवार त्यौहार मनाने पड़ोस के गाँव के लिए रवाना हुआ। सँकरे पहाड़ी रास्ते पर उन्हें बहुत दूर तक पैदल चलना था। बम्बू पूरे रास्ते नोनो को अपनी पीठ पर बैठाए चलता रहा। किस्मत से बम्बू के खुर उन भरालों (जंगली भेड़ों) की तरह ही मज़बूत पकड़ वाले थे जो पहाड़ों पर कभी फिसलते नहीं थे।

गाँव वापस लौटने से पहले तक तो सबकुछ ठीकठाक रहा। उत्सव बहुत मज़ेदार था और पद्मा के घरवालों ने जितना सोचा था उससे कहीं ज़्यादा समय वहाँ बिता दिया। पद्मा, उसके *आमाले-आबाले* और नोनो अभी भी अपने घर से कम से कम दो घण्टे की दूरी पर थे।

जैसे-जैसे सूरज की रोशनी कम होती गई, बम्बू ने रास्ते के कंकड़-पत्थरों पर लड़खड़ाना शुरू कर दिया। कुछेक बार तो वो रास्ते से भटक भी गया। पद्मा ने प्यार से उसकी गर्दन पर हाथ फेरा और उसकी रस्सी को हल्का-सा खींचते हुए फुसफुसाकर कहा, "बम्बू, तुम थक गए हो क्या? तुम्हें हुआ क्या है?"





जैसे-जैसे अँधेरा गहराने लगा, बम्बू पद्मा के करीब आता गया और उसके साथ-साथ चलने लगा। जल्द ही चारों ओर अँधेरा छा गया। बम्बू मानो जम-सा गया। उसने तकलीफ-भरी एक ज़ोरदार रेंक लगाई।

"आखिर दिक्कत क्या है इसे?" आबाले चिल्लाए। "काफी देर से देख रहा हूँ कि यह चल कैसे रहा है! मानो *छंग* के नशे में हो," उन्होंने गुस्से से कहा।

"अरे, कहीं वो बीमार न पड़ गया हो," आमाले ने चिन्तित होकर कहा।



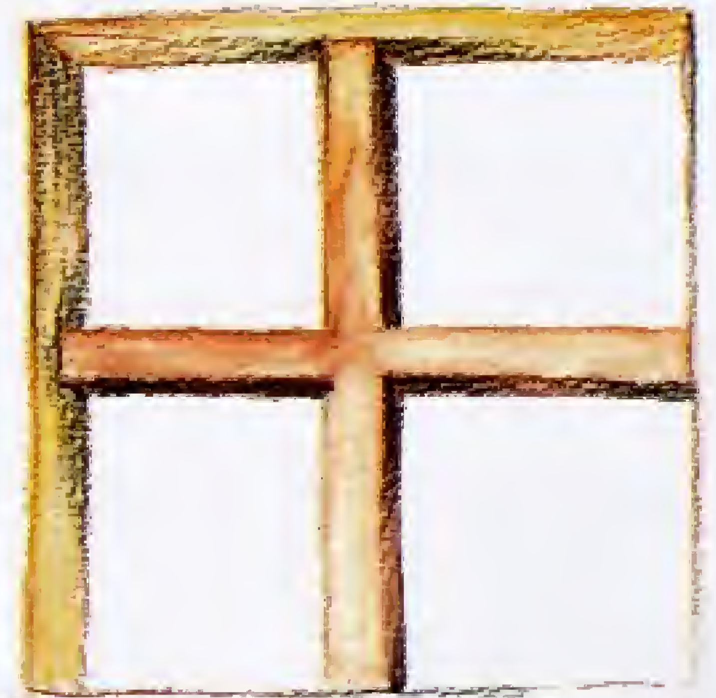
पद्‌मा बम्बू के गलबहियाँ डाले खड़ी थी। उसने अपनी जीभ से "टुक, टुक, टुक" की आवाज़ निकाली। एक ऐसी आवाज़ जिसका उपयोग वो अक्सर बम्बू को जल्दी चलाने के लिए करती थी।

पर बम्बू रत्ती भर भी हिलने को तैयार न था। उसे चलाने के लिए पद्‌मा ने सारे जतन करके देख लिए। उसे पीछे से धक्का दिया, सामने से उसकी रस्सी खींची, यहाँ तक कि उसे लुभाने के लिए उसके सामने गाजर लटकाकर भी देख लिया। बम्बू फिर भी टस से मस नहीं हुआ। इसकी बजाय वो एक बार फिर ज़ोर से रेंका और एकाएक धड़ाम-से घुटनों के बल बैठ गया। यह देखकर आबाले अपना आपा खो बैठे। अपनी पूरी ताकत लगाकर उन्होंने बम्बू को उठाने की कोशिश की। लेकिन बम्बू जहाँ था वहीं बैठा रहा, मानो पत्थर हो गया हो।

यह एक ऐसी रात थी जिसे पद्मा शायद कभी न भूल पाए। घण्टे भर तक पद्मा के फुसलाने, आमाले के डाँटने-डपटने और आबाले द्वारा कोसे जाने के बाद भी कुछ न होने पर सब ने उम्मीद छोड़ दी। आबाले बम्बू के साथ वहीं रुके और बाकी परिवार घर की ओर चल दिया। अगली सुबह, चिड़चिड़े और उनींदे-से आबाले खरामा-खरामा गाँव वापस पहुँचे। उनके पीछे-पीछे बम्बू था। "ये सनकी गधा! जहाँ बैठा था वहीं सो गया। और मैं सारी रात जागता रहा," बड़बड़ाते हुए आबाले घर के अन्दर घुसे। "मुझे डर था कि कोई हिम-तेंदुआ या वन-बिलाव इस पर हमला न बोल दे," उन्होंने जोड़ा।



आबाले के हाथ-मुँह धो लेने और एक कप गरमागरम चाय पी लेने के बाद ही पद्मा बम्बू के अटपटे व्यवहार के बारे में उनसे बात करने का साहस जुटा पाई। आमाले और आबाले को उसने वो बताया जो वो अक्सर शाम ढलते वक्त बाड़े में देखती थी। पद्मा ने कहा, "आबाले, जिस तरह से कल बम्बू अपने घुटनों के बल गिरकर बैठ गया था, वैसा ही मैंने उसे बाड़े में कई बार करते देखा है। और उसके बाद वो बिलकुल हिलता-डुलता ही नहीं है। अगली सुबह ठीक उसी जगह पर मिलता है – एकदम वैसे ही बैठा हुआ।"



आबाले ने गौर से पद्मा की बात सुनी और फिर कहा, "हूँ..., कल रात भी ठीक ऐसा ही हुआ था।" उन्होंने एक कप चाय और डाली और बोले, "यह वाकई अजीब है। शायद मुझे इसके बारे में *आमची* से पूछना चाहिए।"



उसी हफ्ते, कुछ दिन बाद आबाले चिन्ता में डूबे दिखाई दिए। "कोई बात है क्या?" आमाले ने उस वक्त पूछा जब आबाले और पद्मा रात के खाने में बनने वाले *थुकपा* के लिए आटे के गोले बनाने में उनकी मदद कर रहे थे।

"दरअसल," आबाले ने जवाब दिया, "आज मैं *आमची* से मिला। उनका कहना था कि ऐसा लगता है कि बम्बू को रात में न देख पाने की दिक्कत है। उन्होंने इसे 'रतौंधी' बताया था और यह भी बताया कि कभी-कभी ये समस्या इन्सानों को भी होती है।"

"रतौंधी? हे भगवान! ये क्या बीमारी है?" आमाले ने उनकी ओर देखते हुए पूछा।





"*आमची* कह रहे थे कि कुछ जानवरों में यह समस्या पैदाइशी होती है। उनकी आँखें दिन में तो बढ़िया काम करती हैं पर रात में या बहुत कम रोशनी में उनको देखने में मुश्किल होती है। ये अन्धा होने जैसा ही है, लेकिन केवल रात में। उन्होंने पूछा है कि जब बम्बू बच्चा था क्या तब भी रात में हमने उसे अजीब व्यवहार करते देखा था।"

आमाले की आँखें खुली की खुली रह गईं। "हे भगवान!" उन्होंने कहा, "अब मुझे याद आ रहा है कि जब भी मैं नन्हे बम्बू को रात का खाना खिलाती थी, तो मेरी हथेली पर रखे खाने तक पहुँचने में उसे बड़ी परेशानी होती थी!"

"और मुझे भी याद है कि रात में कभी-कभी नन्हे बम्बू को बाड़े में अन्दर करने के लिए धक्का देना पड़ता था," पद्मा ने जोड़ा। "आबाले, मुझे हमेशा यही लगता था कि वो शरारत कर रहा होगा। ठीक वैसे जैसे नोनो बचपन में करता था!

क्या आपको याद है? नोनो कभी भी रात में सोना नहीं चाहता था इसलिए जब भी आमाले या आप उसे ज़बरदस्ती बिस्तर में लिटा देते, वो जबरन अपनी आँखों को खोले रखता था – इस तरह," पद्मा ने अपनी आँखों को उँगलियों से फैलाकर दिखाते हुए कहा। "मैं हमेशा यही सोचती थी कि बम्बू रात में बाड़े में जाना नहीं चाहता क्योंकि वो जागे रहना चाहता था।"

"ओह, यानी बम्बू को यह परेशानी जन्म से थी," आबाले ने कहा। "*आमची* ने कहा था कि इसका कोई इलाज नहीं है। इसका मतलब अगले महीने जब ट्रेकिंग शुरू होगी तब हम उसे लम्बे ट्रेक पर नहीं ले जा पाएँगे। फिर तो वो हमारे लिए बेकार हो जाएगा।"



पद्मा ने भौंचक्के होकर आबाले की ओर देखा। उसके चेहरे पर पीड़ा झलक रही थी। वो अपने पिता को अच्छी तरह जानती थी और जब उन्होंने बम्बू को "बेकार" कहा तो वो यह समझ गई थी कि उनका क्या मतलब हो सकता है। "आबाले," हिम्मत जुटाकर उसने हौले से पूछा, "आपने कहा कि बम्बू हमारे लिए बेकार है, इसका क्या मतलब है आबाले?"

"देखो, हमें बम्बू को खिलाना-पिलाना पड़ता है, है ना? और अगर गर्मी के महीनों में, जब पर्यटक हमारे पहाड़ों पर ट्रेक करने आते हैं, तब हम उसका इस्तेमाल ही नहीं कर पाएँ तो उसे रखने का क्या फायदा? मुझे लगता है कि उसे बेचकर हमें कोई दूसरा गधा खरीद लेना चाहिए, या शायद एक घोड़ा!"

पद्मा का डर सही साबित हुआ। "नहीं, प्लीज़, प्लीज़ उसे मत बेचिए, आबाले," गुहार लगाते हुए पद्मा दौड़कर उनसे लिपट गई।

आबाले अपनी बेटी की भावुकता को सम्हाल नहीं पाए। "ज़रा समझ से काम लो पद्मा," उन्होंने खट-से कहा। "हम इतने अमीर नहीं हैं कि बम्बू जैसे जानवरों को पाल सकें," कहते हुए वे घर से बाहर चले गए।



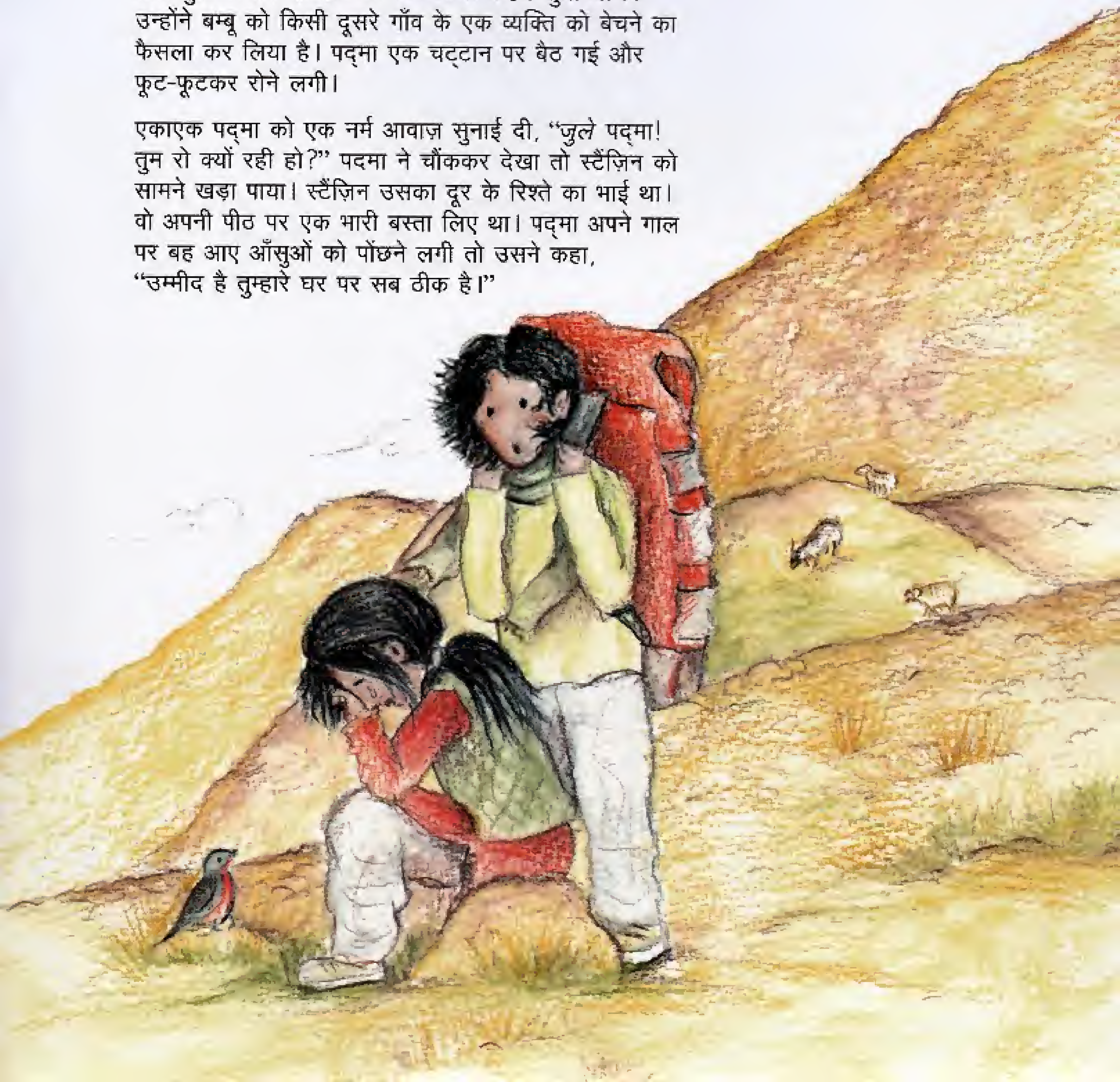
उस रात बाड़े में अपना कामकाज निपटाते हुए पद्मा की आँखों में आँसू थे। उसने बम्बू पर नज़र डाली जो एक कोने में स्तब्ध बैठा हुआ था।

"बेचारा बम्बू," मन ही मन सोचते हुए उसने दौड़कर उसे गले से लगा लिया। उसे कसकर पकड़े हुए ही वो सुबकते हुए बोली, "ओ बम्बू! मैं सोच भी नहीं सकती कि तुम हमारे परिवार से कभी अलग हो!" पर बम्बू हिला तक नहीं।



कोई दो हफ्ते बाद, एक दिन पद्मा ऊपर के पहाड़ों में अपने जानवरों को चरा रही थी। उसकी आँखों में उदासी छाई हुई थी। सुबह उसने आबाले को आमाले से कहते सुना था कि उन्होंने बम्बू को किसी दूसरे गाँव के एक व्यक्ति को बेचने का फैसला कर लिया है। पद्मा एक चट्टान पर बैठ गई और फूट-फूटकर रोने लगी।

एकाएक पद्मा को एक नर्म आवाज़ सुनाई दी, "जुले पद्मा! तुम रो क्यों रही हो?" पदमा ने चौंककर देखा तो स्टैंज़िन को सामने खड़ा पाया। स्टैंज़िन उसका दूर के रिश्ते का भाई था। वो अपनी पीठ पर एक भारी बस्ता लिए था। पद्मा अपने गाल पर बह आए आँसुओं को पोंछने लगी तो उसने कहा, "उम्मीद है तुम्हारे घर पर सब ठीक है।"



पद्मा ने स्टैंज़िन की ओर देखा। पिछली बार जब हम मिले थे तब से वो और लम्बा हो गया था। लेकिन अभी भी उसकी आँखों में कोमलता थी। "एकदम बम्बू की तरह," उसने सोचा और फिर से सिसकने लगी।

"मेरा गधा..." कहते हुए उसका गला रुँध गया। उसने बम्बू की ओर इशारा किया जो थोड़ी दूर चर रहा था। स्टैंज़िन ने बम्बू की ओर देखा और पूछा, "क्या तुम्हारा गधा बीमार है?" सिर हिलाते हुए पद्मा ने कहा, "नहीं, बीमार नहीं। मतलब वो है। मेरा मतलब, हाँ, वो बीमार है। उसको रतौंधी है और आबाले उसे बेचना चाहते हैं।" "रतौंधी?" स्टैंज़िन ने अचरज से पूछा। "वो क्या है?"

"आबाले कह रहे थे कि यह एक ऐसी समस्या है जिसमें आप रात में नहीं देख पाते। ऐसे लोग जो दिन में अच्छे से देख पाते हैं लेकिन अँधेरे में कुछ नहीं देख सकते, उन्हें रतौंधी होती है," पद्मा ने गहरी साँस लेते हुए जवाब दिया।



"अरे बाप रे!" स्टैंज़िन बोला। "कितना अजीब है यह कि दिन के समय आप देख सको और रात में अन्धे हो जाओ।"

"हाँ, यह अजीब तो लगता है," पद्मा ने कहा। फिर वो स्टैंज़िन को बीते हुए हफ्तों की घटनाओं के बारे में बताने लगी।

"लेकिन तुम्हारे आबाले उसे बेचना क्यों चाहते हैं?" स्टैंज़िन ने पूछा।

"आबाले को लगता है कि ट्रेकिंग के दौरान वो समस्या खड़ी कर सकता है। अँधेरा हो जाने पर बम्बू एक कदम भी आगे नहीं बढ़ाता। वो जहाँ भी होता है वहीं ठिठक जाता है," पद्मा ने कहा।

"हम्म," स्टैंज़िन ने कुछ सोचते हुए कहा, "और तुम नहीं चाहती हो कि बम्बू को बेचा जाए?"

"नहीं! वो तब से हमारे साथ है जब वो पैदा हुआ था। उसकी माँ उसे जन्म देते हुए मर गई थी। मेरे लिए तो वो छोटे भाई की तरह है। अगर वो हमें छोड़कर चला गया तो उसकी कमी मुझे बेहद खलेगी," पद्मा ने जवाब दिया।



स्टैंज़िन ने अपना बस्ता नीचे रखा और पद्मा के बगल में बैठ गया। उसने चारों ओर फैले खूबसूरत नज़ारे को देखा। जहाँ तक नज़रें जाती थीं पहाड़ ही पहाड़ थे, गहरे नीले आसमान के पर्दे पर ऊँचा तनकर खड़े हुए। सामने की ढलान में घास के छोटे पीले फूल छितरे हुए थे।

चारों ओर फैली इस खूबसूरती को निहारते हुए उसकी नज़र बम्बू पर पड़ी जो अपने आने वाले कल से बेखबर, शान्ति से घास चरने में मगन था। स्टैंज़िन ने पलटकर पद्मा की ओर देखा जिसकी आँखों में अभी भी आँसू उमड़ रहे थे। "सचमुच दुख की बात है," अपने एक गधे के मर जाने पर अपनी हालत को याद करते हुए उसने सोचा।

"आज रात तुम कहाँ ठहरने वाले हो?" पद्मा ने स्टैंज़िन से पूछा। "तुम हमारे घर पर रह सकते हो," उसने कहा। "शुक्रिया, पर मैं गाँव के मुखिया के घर पर रुकने वाला हूँ। वहाँ दो विदेशी ठहरे हैं जो कल सुबह ट्रेकिंग पर जाएँगे। मुखिया ने मुझे उनका गाइड बनने के लिए कहा है।"

"तो आज रात के खाने पर आ जाना। आबाले और आमाले तुमको देखकर खुश होंगे," पद्मा ने कहा। "अगली बार आऊँगा, पद्मा। इस बार नहीं। आज रात मुझे ट्रेकिंग का सारा साज़ो-सामान पैक कर लेना है और काम खत्म करते-करते देर हो जाएगी।" कहते हुए स्टैंज़िन फुर्ती के साथ उठ खड़ा हुआ और पद्मा को अलविदा कहकर गाँव की ओर चल दिया।



रात का समय था और पद्मा बाड़े में जानवरों को खिला रही थी। अचानक उसे एक फुसफुसाहट सुनाई दी, "पद्मा! मैं हूँ, स्टैंज़िन।"

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" पद्मा चकित थी। स्टैंज़िन बाड़े के अन्दर आ गया और बोला, "सुनो, मेरे पास एक तरकीब है जो शायद बम्बू के काम आ सके।"

"सच?" चारे के गट्ठर को नीचे रखते हुए पद्मा चहक उठी। "क्या तरकीब है? *आमची* का बताया कोई नुस्खा?"

"नहीं, यह कोई दवा वाला इलाज नहीं है। मेरे बस्ते में एक चीज़ है। हमें देखना होगा कि यह काम करता है या नहीं। और अगर काम बन गया तो तुम अपने आबाले को कह सकती हो कि वे बम्बू को न बेचें!" स्टैंज़िन ने कहा।

"यह है क्या? प्लीज़ मुझे बताओ कि यह क्या है," पद्मा ने पूछा। "बम्बू को सड़क पर ले आओ। हम वहीं इसका परीक्षण करेंगे," स्टैंज़िन मुस्कुराते हुए बोला।

"स्टैंज़िन! बम्बू सड़क तक नहीं चल सकता। तुम भूल रहे हो कि यह रात का समय है और वो अपनी जगह से हिलेगा भी नहीं।"

"ओ, हाँ! मैं भी कितना बुद्धू हूँ!" स्टैंज़िन ने कहा। उसने अपना बस्ता ज़मीन पर रखा और उसमें से एक छोटा-सा यंत्र निकाला।

पद्मा को इतना ही दिख रहा था कि वह गोल-सा कुछ है।
"यह क्या है?" उसने बेसब्री से पूछा।



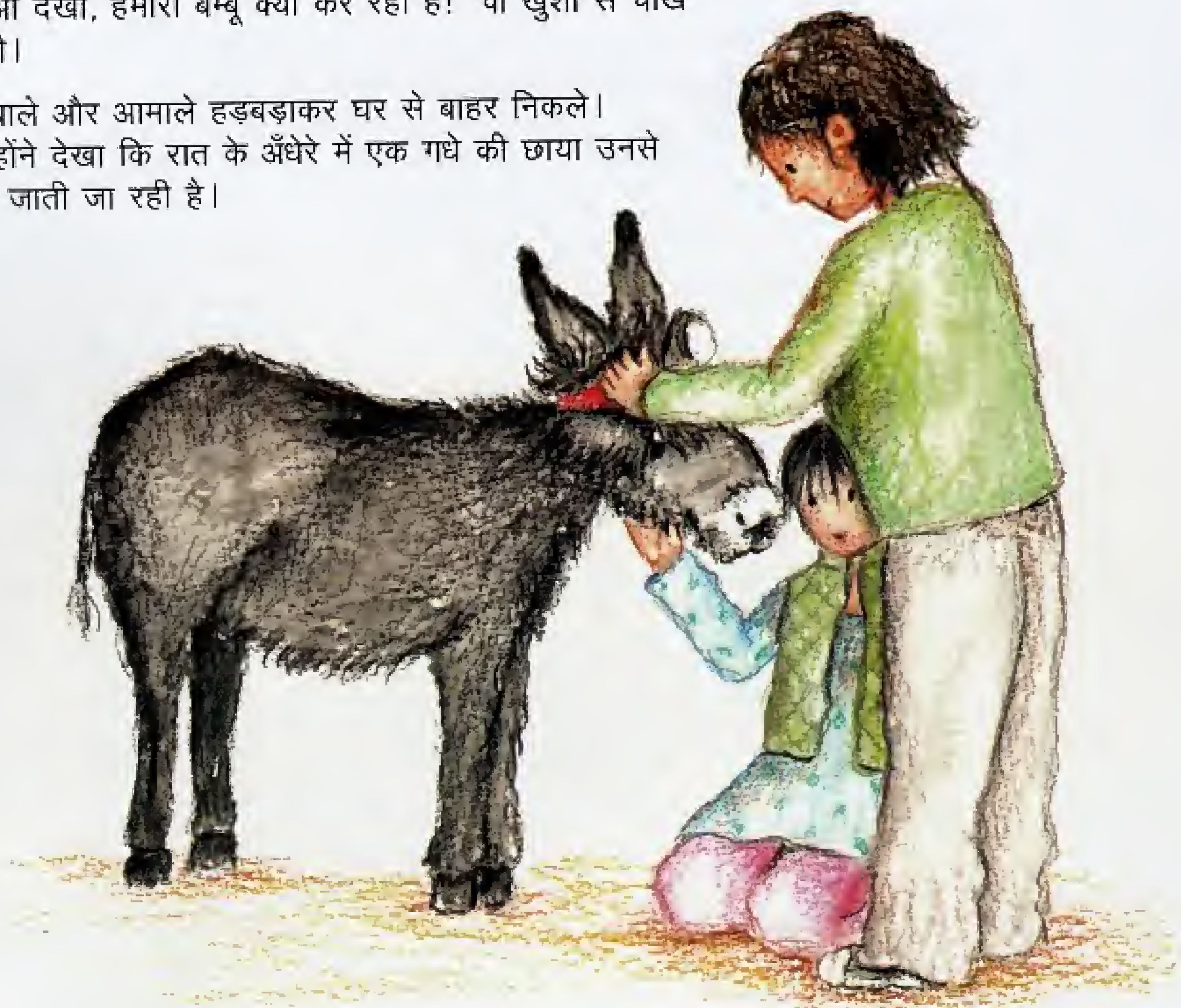
पल भर में स्टैंज़िन ने उसे बम्बू के सिर पर बाँध दिया। पद्मा ने क्लिक की आवाज़ सुनी और बम्बू के ठीक सामने सड़क पर तेज़ रोशनी की एक पट्टी फैल गई।

"पद्मा, यह एक हेड टॉर्च है, हेड टॉर्च!" स्टैंज़िन ने दोहराया।

"टुक, टुक, टुक" की आवाज़ निकालकर उसने बम्बू को आगे बढ़ने के लिए उकसाया। एक पल के लिए तो बम्बू झिझका। फिर उसने अपना सिर ऊपर उठाया, एक कदम आगे बढ़ाया, फिर दूसरा और फिर तीसरा।

"हे भगवान! बम्बू चल रहा है, वो चल रहा है," उत्साह से पद्मा चिल्लाई। "आबाले, आमाले, जादू हो गया, जादू। आओ देखो, हमारा बम्बू क्या कर रहा है!" वो खुशी से चीख उठी।

आबाले और आमाले हड़बड़ाकर घर से बाहर निकले। उन्होंने देखा कि रात के अँधेरे में एक गधे की छाया उनसे दूर जाती जा रही है।







जून का महीना है और ट्रेकिंग का मौसम पूरे ज़ोरों पर है। आबाले कई पर्वतारोही समूहों को पहाड़ी रास्तों पर ले जा रहे हैं। अगर कभी अगले कैम्प तक पहुँचने से पहले अँधेरा हो जाता है तो आबाले गर्व से हेड टॉर्च निकालते हैं और उसे बम्बू के सिर पर बाँध देते हैं।

रोशनी के फैलते ही बम्बू सभी ट्रेकरों का मनोरंजन करते हुए आगे बढ़ता जाता है। कई कैमरे निकल आते हैं और आबाले सिर पर रोशनी का ताज पहने बम्बू के बगल में खड़े होकर खुशी-खुशी तस्वीर खिंचाते हैं।

उधर घर पर पद्‌मा ट्रेकरों द्वारा भेजी गई तस्वीरों को इकट्‌ठा करके एलबम में सहेजती जाती है। हर बार जब वो बम्बू की खास ताज वाली कोई तस्वीर देखती है तो खुशी से मुस्कराती है। वो खुश है कि बम्बू अब भी उनके परिवार का एक हिस्सा है!



मेरे प्रिय आबाले और आमाले के लिए
जिन्होंने मुझे अपना रास्ता खुद तय करने दिया
- सुजाता पद्मनाभन

अम्मा और अप्पा के लिए, प्यार के साथ
- मधुवन्ती अनन्तराजन

बम्बू...
टस से मस न होने वाला गधा
BUMBOO... TAS SE MAS NA HONE WALA GADHA

कहानीः सुजाता पद्मनाभन
चित्रांकनः मधुवन्ती अनन्तराजन
अँग्रेज़ी से अनुवादः सीमा

नवम्बर 2015/ 3000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो और 220 gsm पेपरबोर्ड (कवर)
यह किताब अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध है। ISBN: 978-93-81337-65-3 Price: ₹ 90.00

ISBN: 978-93-81337-88-2
मूल्यः ₹ 65.00

प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मप्र)
फोनः +91 755 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल, फोनः +91 755 268 7589

इस किताब में उपयोग किया गया 100 gsm मेपलिथो कागज़ नवीकरणीय बागानों से प्राप्त लकड़ी से बना है।

कहानी में आए लद्दाखी शब्दः

1. ***आबाले*** - पिता को सम्बोधित करने वाला शब्द
2. ***आमाले*** - माता को सम्बोधित करने वाला शब्द
3. ***आमची*** - लद्दाखी-तिब्बती समग्र चिकित्सा प्रणाली का एक पारम्परिक चिकित्सक
4. ***थुकपा*** - हल्के स्वाद वाला हिमालयी नूडल सूप
5. ***छंग*** - जौ का बना एक मादक पेय
6. ***जुले*** - किसी से मिलने पर अभिवादन करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द

सुजाता पद्‌मनाभन

सुजाता को खुली हवा में घूमना पसन्द है, खासकर पहाड़ों और जंगली इलाकों में – चिड़ियों, तितलियों और अन्य कीड़ों को देखते और कलकल बहती नदी को सुनते हुए। बहरहाल, वे पुणे में रहती हैं और अपना कुछ समय पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र में काम करते हुए गुज़ारती हैं। उन्होंने बच्चों के लिए तीन कहानी की किताबें लिखी हैं। इसके अलावा उन्होंने बच्चों और शिक्षकों के लिए पर्यावरण शिक्षा पुस्तिकाएँ, खेल और संसाधन किट भी विकसित की हैं। वे कल्पवृक्ष नामक पर्यावरण एक्शन समूह की सदस्य हैं।

सुजाता शुक्रिया अदा करना चाहेंगी अपनी भाभी राजुल पद्‌मनाभन का, जिन्होंने उन्हें यह कहानी लिखने के लिए उकसाया; अपनी बहन वसुन्धरा भल्ला का, जिन्होंने इसका पहला ड्राफ्ट सम्पादित किया और जिगमत दादुल का, लद्दाख का ट्रेक करते हुए जिनकी कल्पनाशील जुगाड़ की वजह से एक बम्बू को दृष्टि मिली, उनकी टीम अपने गंतव्य तक पहुँच पाई और इस कहानी के लिए उन्हें प्रेरणा मिली।

मधुवन्ती अनन्तराजन

मधु को पढ़ना और चित्र बनाना पसन्द है। और पहाड़ों से प्यार है। यह किताब उनके लिए ये तीनों चीज़ें एक साथ लेकर आई। इस किताब के चित्र बनाने के बाद से उन्होंने शिक्षा में पीएचडी करने की एक लम्बी कठिन चढ़ाई शुरू कर दी है जिसके उस पार क्या करना है, यह अभी पक्का नहीं है।



बम्बू लद्दाख का एक चंचल और प्यारा-सा गधा है। वह पद्मा का पसन्दीदा है। जब वह बड़ा हुआ और पर्यटन का मौसम पास आने लगा तो पद्मा के घरवालों को उसके बारे में क्या पता चला?

रात होते ही वह अजीब-सा व्यवहार क्यों करने लगता है? वह बिलकुल भी हिलता-डुलता क्यों नहीं है? क्या पद्मा के पिता अब उसे बेच देंगे?

एक प्यारी लद्दाखी लड़की की देखभाल और एक लद्दाखी युवा की सरल सूझबूझ बम्बू को अपनी असामान्य बीमारी से उबरने में कैसे मदद करती है? जानिए एक सच्ची घटना से प्रेरित इस कहानी में...



एकलव्य

मूल्य: ₹ 65.00

